संशोधित

शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूप-रेखा

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (भोजपुर) के अन्तर्गत पी-एच.डी. उपाधि हेतु संक्षिप्त रूप-रेखा

शीर्षक

कवि 'वीर' कृत जंबूसामिचरिउ का आलोचनात्मक अध्ययन

संकाय – मानविकी

विषय– प्राकृत एवं जैनशास्त्र

Bhoudhary
12/04/21
शोध-निर्देशक
(डॉ० दुधनाथ चौधरी)
अध्यक्ष
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
भोजपुर (बिहार) – 80230

HEAD
Dept. of Prakrit & Jainolc
Veer Kunwar Sing University
Ara 802301 (Bihar

Rajeev Kumar
शोध छात्र
(राजीव कुमार)
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
भोजपुर (बिहार) – 802301

शीर्षक : कवि 'वीर' कृत जंबूसामिचरिउ का आलोचनात्मक अध्ययन

परिचय (Introduction) :–

जंबूसामिचरिउ अपभ्रंश की एक अमूल्य कृति है। इसकी रचना 11वीं शती के सुप्रसिद्ध कवि वीर ने की है। इस रचना का उद्देश्य जनमानस को हिंसा से विरत करना है। ग्रन्थकार ने बड़े ही सटीक ढंग से 'जंम्बूस्वामी' के जीवन चरित द्वारा हिंसा के कुपरिणामों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अहिंसा की ओर अग्रसर होने की ओर प्रेरित किया है।

महत्त्व (Importance) :–

प्रस्तुत महाकाव्य का अपना ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है। प्रस्तुत कथानक की अपनी विशिष्टता है जिसके कारण इसका सहस्त्र वर्ष से भी अधिक काल से समाज में बड़ा सम्मान एवं प्रचार पाया जाता है। नैतिक जीवन में भारतीय संस्कृति पर अहिंसा सिद्धान्त की गहरी छाप पड़ी है और उसने हिंसात्मक क्रियाओं को समाज के उत्कृष्ट वर्ग से प्रायः हटा दिया है इसलिए भारतीय धर्म–दर्शन, भगवान महावीर के धर्मोपदेश, भाषा और साहित्य के अध्ययन के लिए अपभ्रंश भाषा एवं इसमें रचित ग्रन्थों का अध्ययन आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है।

विश्लेषण (Analysis) :–

अपभ्रंश भाषा में रचित जंबूसामिचरिउ एक महत्त्वपूर्ण चरित–काव्य है। इसके प्रणेता वीर कवि हैं। जंबूसामिचरिउ की रचना ग्यारह संधियों में पूर्ण हुई है। इस महाकाव्य में जंबूस्वामी के जीवनचरित के सम्बन्ध में आगमिक साहित्य से लेकर सम्पूर्ण प्राकृत, अपभ्रंश एवं जैन साहित्य में जो कुछ भी वर्णन उपलब्ध है, उसके हर पहलू का अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा।

जम्बूस्वामी जैन श्रमण परम्परा के एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरुष थे, जिन्होंने ई०पू० 527 में भगवान् महावीर के तीर्थ में उनके साक्षात शिष्य आचार्य सुधर्मा से जिन–दीक्षा स्वीकार की थी। अपनी अलौकिक प्रतिभा एवं कठोर तप साधना के कारण वे जैन श्रमण संघ के न केवल प्रधानाचार्य ही बने, बल्कि उन्होंने श्रमण–साधना की परम्परा और पुरातन आगमिक साहित्य को सुरक्षित रखने, उसका प्रचार प्रसार करने तथा चिरस्थायी बनाने में भी अपना अभूतपूर्व एवं अद्वितीय योगदान दिया। प्रश्नों के माध्यम से जम्बूस्वामी ने सुधर्मा स्वामी से सारे आगमों से वह सारा ज्ञान उनकी शिष्य–संतति को प्राप्त किये और उनके द्वारा आगे के शिष्य संतियों को। ऐतिहासिक जीवन चरित के साथ–साथ कथानक की दृष्टि से भी यह महाकाव्य कम महत्त्व का नहीं है। जम्बूस्वामी भी महावीर और बुद्ध के समान सारे सर्वोत्तम सुख को लात मारकर मुनि जीवन अंगीकार करके जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर परिपूर्ण बोधि अर्थात् केवलज्ञान और मोक्ष को प्राप्त किये थे। यही कारण है कि प्राचीन प्राकृत साहित्य से लेकर संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, गुजराती और हिन्दी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'जंबूसामिचरिउ' का महत्त्व बहुत अधिक है। उपर्युक्त महत्त्व को ध्यान में रखकर ही मैं अपना शोध विषय 'वीर कवि कृत जंबूसामिचरिउ का समीक्षात्मक अध्ययन' का चयन किया है।

शोध विधि (Methodology) :–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की पूर्णता हेतु सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। मैं निम्नलिखित दो श्रोतों का सहयोग लेना चाहूँगा –

(क) आन्तरिक श्रोत :–

इसमें प्राचीन एवं अर्वाचीन धर्म ग्रन्थों, जीवन चरित से सम्बन्धित ग्रन्थों, साहित्यिक ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं का विभिन्न पुस्तकालयों एवं वाचनालयों में जाकर अध्ययय करूँगा।

(ख) वाह्य श्रोत :—

विभिन्न धार्मिक स्थलों, पुरातात्विक स्थलों का परिभ्रमण, विद्वानों एवं शिक्षार्थियों के साथ साक्षात्कार करने के पश्चात् अध्ययन, मनन एवं लेखन का कार्य करूँगा।

परिकल्पना (Hypothesis) :—

उपर्युक्त शोध कार्य की पूर्णता के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहूँगा कि व्यक्ति तथा समाज का चरित्र निर्माण हो सके। इसके लिए दर्शन का अध्ययन परमावश्यक है। समाज में हिंसा और दुर्भावना का भाव न हो तथा जीव, समाज और देश की सेवा हो सके इसके लिए भगवान् महावीर और बुद्ध के दर्शन कितने प्रासंगिक होगें मेरे शोध कार्य का यह भी उद्देश्य है। समय की पुकार ऐसे शोध कार्य की अपेक्षा रखता है।

सहायक ग्रन्थ (Reference Books) :—

1. पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक – जैन साहित्य का वृहद् इतिहास, भाग– 1–6 तक
2. डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री – प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
3. डॉ० जगदीशचन्द्र जैन – प्राकृत साहित्य का इतिहास
4. डॉ० बलदेव उपाध्याय – संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास
5. डॉ० भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञान
6. डॉ० कर्ण सिंह – भाषा विज्ञान
7. प्रो० हरिवंश कोछड़ – अपभ्रंश साहित्य
8. रामधारी सिंह 'दिनकर' – संस्कृति के चार अध्याय
9. भारतीय ज्ञानपीठ, काशी – महापुराण
10. जिनदत्तसूरि – अपभ्रंश काव्यत्रयी

11. भडारकर प्राच्य शोध संस्थान पूना– जंबू चरित
12. मुनि जिनविजय सिंधिग्रन्थमाला– जंबूचरियं
13. डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह – पाहुडदोहा
14. पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित – आनन्दघन का रहस्यवाद.
15. विजयशंकर विद्याराम – जंबूस्वामी कथा
16. पं० राजमल्ल – जम्बूस्वामी चरित
17. उपाध्याय यशोविजय – जम्बूस्वामी गीता
18. मानसिंह – जम्बूस्वामी चरित
19. जयशेखर – जम्बूस्वामी चरित्र
20. जिनदत्तसूरि – अपभ्रंश काव्यत्रयी
21. मोतीलाल वानारणसीदास द्वारा प्रकाशित – पाइय सद्द मंहण्णवो
22. श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री – जैन दर्शन स्वरूप एवं विश्लेषण
23. डॉ० जगदीश चन्द्र जैन – जैनागम साहित्य में भारतीय समाज
24. श्री आगम समिति प्रकाशन, ब्यावर – जैनागम ग्रन्थ
25. डॉ० एच०सी भयाणी – पउमचरिउ

कार्य योजना (Plan of Work) :–

इस प्रकार वीर कवि कृत जंबूसामिचरिउ का समीक्षात्मक अध्ययन के लिए ऐतिहासिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन कर समाज में हो रहे आचरण एवं विचार तथा विश्वास संबंधी विध्वंस पर सोच नियंत्रण किया जा सकता है। भगवान् महावीर एवं भगवान् बुद्ध के उपदेशों को आज के संदर्भ में चरितार्थ कराने की योजना शोध कार्य का उद्देश्य होगा। चूँकि यह ग्रन्थ समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन की अपेक्षा रखता है, यही कारण है कि मैं इस ग्रन्थ को अपना शोध का विषय चुना तथा शोध कार्य करने हेतु प्रवृत्त हुआ।

शोध का स्वरूप (Research Design)

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूप--रेखा लगभग इस प्रकार होगी –

1. प्रथम अध्याय : प्रस्तावना
2. द्वितीय अध्याय : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
3. तृतीय अध्याय : ग्रन्थकार का सामान्य परिचय
4. चतुर्थ अध्याय : जंबूसामिचरिउ की कथावस्तु
5. पंचम अध्याय : जंबूसामिचरिउ का काव्यात्मक मूल्यांकन
6. षष्ठ अध्याय : जंबूसामिचरिउ की भाषा–शैली
7. सप्तम अध्याय : ग्रन्थकार का अन्य कवि से तुलना
8. अष्टम अध्याय : दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक विवेचन
9. नवम अध्याय : उपसंहार

सहायक ग्रन्थों की सूची

(डॉ० दुधनाथ चौधरी)
12/04/21
शोध-निर्देशक सह अध्यक्ष
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
भोजपुर (बिहार) - 80230

HEAD
P. G. Dept. of Prakrit & Jainolo.
Veer Kunwar Sing University
Ara 802301 (Bihar

Rajeev Kumar
(राजीव कुमार)
शोध छात्र
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र वि
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आ
भोजपुर (बिहार) - 802301